

जैन समाजात प्रचंड खपाचे व लोकप्रिय मासिक



जैन जागृति

(Since 1969)

www.jainjagruti.in

६२ ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, भापकर पेट्रोल पंपा
समोर, सिटी प्राईडच्या पुढची लेन, पुणे ४११०३७.

मो. : ८२६२०५६४८०, ✆ : ०२० - २४२१५५८३

मोबाईल : संजय ९८२२०८६९९७, सुनंदा ९४२३५६२९९१

संपादक व प्रकाशक : संजय के. चोरडिया

सहसंपादक : सौ. सुनंदा एस. चोरडिया

❖ संस्थापक ❖

स्व. श्री. कांतीलालजी चोरडिया

❖ वर्ष ५५ वे ❖ अंक १ ला ❖ सप्टेंबर २०२३ ❖ वीर संवत २५४९ ❖ विक्रम संवत २०८०

या अंकात	पान नं.	पान नं.
● मन, वचन, काया से क्षमायाचना कर, दिल की दीवाली मनाएँ	२३	● संतो से सामान्य भाषा में व्यवहार कैसे करें ? ९६ ● अजीर्ण होने पर भोजन न करना ९७
● क्रोध कषाय : स्वरूप, दुष्परिणाम कारण एवं निवारण	२७	● क्षमा : जीवन का अमृत ९९ ● प्रेम की मिठी नजर, मिटे द्वेष का जहर १०३
● कडवे प्रवचन	३१	● आगम : जीवन जीने की नियमावली ११५
● कव्हर तपशील	३२	● सुक्ति से मुक्ति : पुरुषार्थ ११८
● दिल बडा रखो	४३	● कविता संग्रहाचे प्रकाशन आणि अभिष्टुचिंतन १२३
● तप को जीवन - व्यवहार का अंग बनाएँ	४९	● नेहमी चांगला विचार मनात आणा १२७
● झुककर क्षमा माँगने का पर्व है - संवत्सरी	५७	● मन के मन तक १२८
● मोक्ष मार्ग के २१ कदम : परिग्रह छोड़ें - संतोषी बनें	६७	● रंगबिरंगी : रंग सोच के १३१
● आध्यात्मिक ऊर्जा के लिए तप की आराधना	७२	● सुख म्हणजे नक्की काय असतं १३६
● सम्यक् दर्शन	७५	● श्रीमद् राजचंद्र की दृष्टी में ज्ञान १३९
● एक प्रेरक प्रसंग	७८	● सर्वश्रेष्ठ महापर्व संवत्सरी १४१
● कपिल केवली	७९	● महावीर वाणी १४२
● महामंत्र क्यों है - नवकार	९१	● जीवन बोध : अपनी पहचान १४४
		● हास्य जागृति १४५

● राजस्थान राज्य श्रमण संस्कृति बोर्ड का गठन	१४७	● सौ. सुषमा चोरडिया - पुरस्कार	१६४
● सुर्यदत्त ग्रुप ऑफ इन्स्टिट्यूट - पुणे	१४८	● विज्ञान जनक - डॉ. विक्रम साराभाई	१६५
● जैन श्वे. मू. युवक महासंघ, पुणे	१४९	● आचार्य श्री आनंदऋषिजी म.सा. - जन्मोत्सव	१६७
● श्री प्रीतिसुधाजी म.सा. - जन्मदिन	१५१	● डायग्नोपिन व एच.व्ही देसाई आय हॉस्पिटल	१६९
● कारगिल विजय दिवस	१५२	● पंन्यासप्रवर श्री अरुणविजयजी म.सा.	१७१
● जागृत विचार	१५३	● कौनसा संसार छोडना वैराग्य	१७१
● हस्तीनापूर, दिल्ली यात्रा संघ, पुणे	१५५	● बहुत छोटी है हमारी सह यात्रा	१७२
● माता-पिता सन्मान समारोह - मालेगांव	१५५	● जीवन उपयोगी बोल है बडे अनमोल	१७३
● कु. ओवी फिरोदिया - पुणे	१५७	● जिंदगी शानदार है, जी भरकर जीएँ	१७५
● श्री. विजयजी नवलखा - सन्मान	१५७	● क्षमा के फूल	१७६
● वैराग्य वाणी	१५९	● सुरक्षा - समय मूल्यवान है, परन्तु जीवन अमूल्य है	१७७
● महालाभ	१६१	● विविध धार्मिक, सामाजिक बातम्या	
● क्षेत्रपाल प्रतिष्ठान - लुंकड भोजन शाळा	१६३		

जैन जागृति मासिकाचे वर्गणी दर ❖ एका वर्षात तीन मोठ्या अंकासहित

पंचवार्षिक	रु. २२००	त्रिवार्षिक	रु. १३५०	वार्षिक	रु. ५००
------------	----------	-------------	----------	---------	---------

या अंकाची किंमत ५० रुपये. ● Google Pay - M. 9822086997



(+ १ वर्षासाठी रजिस्टर पोस्टाने अंक मिळवण्यासाठी रु. ३००/- Extra)

जैन जागृति वर्गणी व जाहिरात - रोख/Google Pay - M. 9822086997 /
AT PAR चेक/पुणे चेकने/RTGS इत्यादी द्वारा पाठवावी

BANK ACCOUNT DETAILS - A/C Name : JAIN JAGRUTI

Bank : STATE BANK OF INDIA ● Branch : Market Yard, Pune 37.

Current A/c No. : 10521020146 ● IFS Code : SBIN0006117

'जैन जागृति' हे मासिक मालक, मुद्रक व प्रकाशक एस. के. चोरडिया यांनी प्रकाश ऑफसेट, शॉप नं. १२-१३, पर्वती टॉवर्स, पुणे - ४११००९ येथे छापून ६२ बी, ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, पुणे - ४११०३७ येथे प्रसिध्द केले. संपादक - एस. के. चोरडिया

"Jain Jagruti" monthly magazine is owned, printed & published by S. K. Chordia, Printed at Prakash Offset, Shop No. 12-13, Parvati Towers, Pune 411009. Published at 62-B, Ruturaj Society, Pune - Satara Road, Pune - 411 037. Editor - S. K. Chordia

टिप : या अंकात प्रसिध्द झालेल्या मताशी संपादक सहमत असतीलच असे नाही. जैन जागृति संबंधित कोणत्याही कायदेशीर कारवाईसाठी पुणे न्यायलय क्षेत्र ग्राह्य धरले जाईल.

टिप : जैन जागृति अंकात प्रकाशित लेख, बातम्या, जाहिरातीचे सर्वाधिकार सुरक्षीत आहेत.

मन-वचन-काया से क्षमायाचना कर, दिल की दीवाली मनाएँ

प्रवचनकार : आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.

स्व-स्वरूप में रमण करने वाले सिद्ध भगवन्त, खन्ती-सूरा अरिहन्ता यानी क्षमा में वीर कहलाने वाले अरिहन्त भगवन्त एवं सहनशीलता के पथ पर चलने वाले सन्त भगवन्तों के चरणों में कोटि-कोटि वन्दन ! बन्धुओं!

साधु-धर्म के दस बोलों में खन्ती अर्थात् क्षमा को धर्म का आधार बताया गया है। जीवन में जहाँ सहनशीलता है, वह धर्म के द्वार खोलने वाली है। मोक्ष-मार्ग के चार द्वार बताये गए हैं-

**चतारी धम्मदारा पण्णात्ता, तं जहा-
खंती मुत्ती, अज्जवे, मद्दवे ॥ -
ठाणांग सूत्र ४.४.६२७**

अर्थात् धर्म के चार द्वार कहे गये हैं, जैसे क्षमा (खंती), निर्लोभता (मुत्ती), आर्जव या सरलता (अज्जवे) एवं मार्दव या मृदुता (मद्दवे)। धर्म के इन चार द्वारों में पहला द्वार है खन्ती या क्षमा ।

आचार्य भगवन्त (पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमलजी महाराज) ने धर्म की व्याख्या करते हुए चार प्रश्न किए:-

कथं उत्पद्यते धर्मः ? कथं धर्मो विवर्धते ?

कथं च स्थाप्यते धर्मः ? कथं धर्मो विनश्यति ?

अर्थात् धर्म उत्पन्न कहाँ होता है ? धर्म बढ़ता कैसे है ? धर्म टिकता कैसे है ? और धर्म का विलोप कैसे होता है ?

नीति में कहा गया है - धर्म सत्य से उत्पन्न होता है। दया-दान से धर्म बढ़ता है, क्षमा से धर्म की नींव पक्की होती है। क्रोध धर्म का विनाश करने वाला है। क्रोध का अर्थ यहाँ कषाय से है। धर्म का नाश क्रोध कषाय करता है। क्षमा धर्म को टिकाये रखती है। विनय भी है, सरलता भी है, दया भी है, सत्यवादिता भी है,

दानवीरता भी है पर सहनशीलता नहीं तो धर्म कैसे टिकेगा? आया हुआ, मिलाया हुआ, प्रसिद्धि पाया हुआ धर्म भी विनष्ट हो जाता है। धर्म को टिकाऊ बनाए रखने का रास्ता है- सहनशीलता। इसे क्षमा भी कह सकते हैं।

आज का दिन हमें धर्म को जीवन में स्थाई बनाने की कला सिखा रहा है। स्थिरता लाने का यह प्रारम्भ है। आज का दिन संवत्सर का है, इतिश्री का नहीं। आज प्रारम्भ का दिन है, शुरुआत करें। धर्म को टिकाऊ करना है तो नींव को स्थाई करने की जरूरत है। धर्म को टिकाने का काम खन्ती करता है। खन्ती यानी क्षमा। क्षमा अर्थात् सहनशीलता। इस सहनशीलता को बढ़ाने के लिए कई दिनों से दिल की दीवाली शब्द प्रयुक्त कर रहा हूँ, वह दिन आज का है।

दीवाली तीन तरह से मनाई जाती है। पहला काम है घर की साफ-सफाई करना यानी कचरा कहीं नहीं रहे। दूसरा काम है पुताई। तीसरा काम है हिसाब-किताब मिलाना। पूर्व में दीवाली के तीन काम कहे जाते थे। दीपावली आज है तो आज ही कचरा साफ किया जाता है, ऐसा नहीं है। सफाई करने का काम कई दिनों पहले से चालू हो जाता है। आपने हमने दिल की दीवाली मनाने के लिए सात दिन पहले कचरा निकालने का काम चालू कर दिया। पहले दिन अज्ञान दूर करने के लिए ज्ञान-दिवस के रूप में ज्ञान क्या होता है, ज्ञान कैसे प्राप्त करते हैं, समझा। मैंने दृष्टान्त के रूप में कहा था कि मकखी श्लेष्म पर बैठती है तो वह खाने की इच्छा से बैठती है। किन्तु उसकी भूख नहीं मिटती, सो नहीं मिटती। अन्त में वह श्लेष्म में फँस कर प्राण गँवा देती है। अज्ञानी जीव भी विषय-वासना में, कमाने-खाने में, भोग-विलास में संसार से इस तरह चिपकता

है कि उसे सुख मिले या नहीं, परन्तु संसार में फँस कर रह जाता है। आप भोग भोगने वालों से पूछ लें और अगर आप भोग भोगने वाले हैं तो अपना चिन्तन कर लें।

मैं एक नहीं, अनेकानेक व्यक्तियों की बात कह सकता हूँ जो कहते हैं - “बाबजी! आप म्हाने पेली चेताय देता तो मैं उण रास्ता सूँ दूर रेवता, संसार सागर में फँसता ही नहीं।” अज्ञान के कचरे को दूर करने के लिए ज्ञान और वह भी सम्यक् ज्ञान सीखना होता है। ज्ञान सीखने के लिए उग्र की बात कहना ठीक नहीं है। हर उग्र का आदमी ज्ञान प्राप्त कर सकता है। अतिमुक्त कुमार का नाम आपने सुना है उसकी दीक्षा की भावना होने पर माँ-बाप ने कहा-बेटा ! अभी तू छोटा है संयम क्या होता है, तुम्हें मालूम नहीं? अतिमुक्तकुमार के वे शब्द - जो जानता हूँ वह नहीं जानता और जो नहीं जानता, वह जानता हूँ। माँ-बाप ने पूछा तो छोटे-से बालक ने जानने और नहीं जानने का हार्द बता दिया।’ छोटा हो या बड़ा अज्ञान हटाने के साथ जिसके साधना में चरण बढ़ते हैं, वह मुक्ति पा सकता है।

आपने सुदर्शन का उदाहरण सुना है। श्रमणोपासक सुदर्शन भगवान् महावीर के दर्शन करने की भावना से निकला। उसे यह विदित था कि रास्ते में संकट है। उसे श्रद्धा थी और श्रद्धा के बल पर ही नगर के बाहर जाने में उसे भय नहीं लगा। वह दृढधर्मी था। घर वालों ने कहा, समझाया कि भगवान तो घट-घट की जानते हैं। तुम यहीं से वन्दन कर लो, भगवान तुम्हारी वन्दना स्वीकार कर लेंगे। कई हैं जो मखौल उड़ाने के लिए कह जाते हैं- जाने दो, पता चल जायगा। चौबेजी छब्बेजी बनने जा तो रहे हैं, अर्जुन को देखते ही दुब्बेजी बनकर लौट जाएँगे। कई ऐसे होते हैं जो धर्म-साधना स्वयं तो करते नहीं और जो करते हैं उनके लिए उल्टी-सुलटी प्रतिक्रिया करने में शान समझते हैं। सुदर्शन श्रमणोपासक था, दृढधर्मी था,

उसको भगवान के प्रति अटूट श्रद्धा थी। वह यह भी जानता था कि भगवान सर्वज्ञ हैं, सर्वदर्शी हैं, घट-घट की बात जानते हैं। भगवान सब जानते हैं पर मेरी सन्तुष्टी तो तब होगी जब मैं उनके दर्शन-वन्दन का लाभ प्राप्त करूँगा।

मैंने एक-एक दिन का विवरण विवेचन रखते हुए ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, दान, शील, आत्म-शुद्धि का स्वरूप समझाने का प्रयास किया है। आपने सुना है, आप केवल मात्र सुनकर ही न रहें। जो-जो दृष्टान्त कहे हैं, हित- शिक्षा की बातें बताई हैं, आप जुगाली करें। गाय-बैल आदि जानवर खाने के बाद जुगाली करते हैं। जुगाली करने का मतलब होता है- पाचन। आपने जो कुछ सुना, समझा उसे जीवन-व्यवहार में चरितार्थ करने की जरूरत है। पाचन होने पर रस बनता है। ऐसे ही व्रत नियम लेकर साधना-आराधना में आगे बढ़ने पर सिद्धि प्राप्त हो सकती है।

एक होता है - प्रियधर्मी और एक होता है- दृढधर्मी। प्रियधर्मी प्रतिदिन धर्म करता है पर दृढधर्मी जान की बाजी लगाकर धर्म की प्रभावना करता है। सेठ सुदर्शन दृढधर्मी था। वह भगवान के दर्शन-वन्दन करने की भावना से नगर-सीमा के बाहर निकला। उसको न घबराहट थी, न कोई भय। अर्जुनमाली ने देखा कि कोई आ रहा है। सुदर्शन श्रमणोपासक को भी लगा कि अर्जुनमाली इधर आ रहा है। डरने के बजाय श्रावक ने सागारी संधारे के प्रत्याख्यान कर लिए। चिन्तन चला- जन्म लेने वाला, मरण प्राप्त करता है पर उस श्रमणोपासक को यह भी ज्ञात था कि तप करते-करते बल जाता है तो बल गया नहीं समझना। दान देते-देते धन खूटता है तो धन खूटता नहीं समझना। ऐसे ही धर्म करते-करते प्राण चले जायँ तो प्राणों का नाश समझने के बजाय परीक्षा में पास हुआ समझना।

सुदर्शन श्रमणोपासक दृढधर्मी था, भगवान पर उसे अटूट श्रद्धा थी और उपद्रव के समय पूरी सजगता

थी। सुदर्शन को मृत्यु का भय नहीं था। वह अचल-अडोल प्रत्याख्यान कर खड़ा रह गया। श्रद्धा में बड़ी ताकत होती है। मैं एक बहिन की बात कहूँ। उस बहिन को कैंसर था पर तप में उसकी अटूट आस्था थी। वह बहिन बंगारपेट में दर्शन करने आई। सहज पूछ लिया - बहिन क्या वेदना है? वह बोली- अन्नदाता। वेदना क्या है? यह तो केवलज्ञानी जाने, पर मैं इतना जानती हूँ “मरना तो है ही, अतः रोग में मैं जितना धर्म कर सकती हूँ, करूँगी। यह कैंसर का रोग न जाने कब मौत का सन्देश ले आए। मैं अनजाने में न चली जाऊँ इसलिए परिवारजनों से कहती हूँ मेरा ध्यान रखना, हॉस्पिटल मत ले जाना, मुझे ब्रत-प्रत्याख्यान और संथारे का सहयोग करना। मैं स्वयं प्रमाद नहीं करती।” यह बात उस बहिन के लिए नहीं, सबके लिए है। अन्त समय में घर की, परिवार की और सुख-सुविधा के साधनों की ममता नहीं रहे। कभी मौत का वारन्ट आ जाय तो मैं बिना प्रत्याख्यान न जाऊँ यह भावना रहे।

सुदर्शन सेठ के सामने अर्जुन मालाकार का, जिसके पिण्ड में यक्ष था, उपद्रव सामने आया। उपद्रव की स्थिति में उस श्रमणोपासक का चिन्तन चला और सागारी संथारा कर लिया। धर्म करते प्राण छूट जाय, ऐसा अवसर सबको कहाँ मिलता है? धर्म पर दृढ़ आस्था से श्रमणोपासक के प्राण तो नहीं गए किन्तु अर्जुन जो यक्ष के कारण कष्ट में था, उसके कष्ट दूर हो गए।

आज आपकी क्या स्थिति है? मारणान्तिक कष्ट तो दूर, थोड़ा बहुत संकट आता है तो सबसे पहले सामायिक आदि धर्म-क्रिया का लिया नियम टूटता है। बच्चा बारह महिने तक स्कूल में पढ़ता रहे और परीक्षा में फ़ैल हो जाय तो? परीक्षा में पास होने वालों को अगली कक्षा में पढ़ने का मौका मिलता है, पास होने पर ही मंजिल मिलती है।

आपके मन में कितनी श्रद्धा है, आप अपना

चिन्तन करना। आपने अंतगड़ सूत्र में आये नब्बे पुरुषों का चरित्र सुना। मैं परम्परा का वर्णन करूँ तो समय पूरा हो जाएगा। हम महापुरुषों का जीवन चरित्र सुनकर - समझकर हमारे भीतर रही अविरति का कचरा निकालें। झोंपड़ी वाला जब झोंपड़ी से बाहर निकलता है तो झोंपड़ी बन्द करके निकलता है। दुकानदार दुकान से जाते समय ताला-कुण्डा अच्छी तरह देखकर दुकान छोड़ता है। आप जब भी तिजोरी बन्द करते हैं, तो अच्छी तरह देखते हैं कि तिजोरी ठीक से बन्द हुई या नहीं? जीवन में अविरति का कचरा कब हटा? कब विरति का ताला लगा? क्या यह भी कभी देखते हैं?

पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व दिल की दीवाली है। अज्ञान, आश्रव, अविरति का कचरा हटाकर तप, दान, संयम, शुद्धिकरण ये चार पुताई करने जैसे हैं। पहले मकान का कचरा हटाया जाता है फिर पुताई की जाती है। पर्व के इन आठ दिनों में क्या किया? इस पर विचार करें। मेरी तप करने की जितनी सामर्थ्य है क्या मैंने उतना तप किया? तप करें, तप की अनुमोदना भी करें। आपने तपस्या करने वालों को धन्यवाद कह कर अनुमोदना कर ली, आप ऐसा समझते हैं। केवल धन्यवाद कहने मात्र से तप नहीं हो जाता। तप करने से होता है। कोई अनशन करे, कदाचित आप अनशन न कर सकें तो ऊणोदरी भी करें तो वह आपका अनुमोदन है। आप धन्यवाद करें, पर साथ ही आप कुछ न कुछ नियम करें भले ही वह पोरसी ही क्यों न हो। आप कोई-न-कोई तप, चाहे आभ्यन्तर तप हो या बाह्य, तप करें और करने वालों का धन्यवाद भी करें।

पर्युषण पर्व का पाँचवा दिन दान-दिवस था। अर्जन के साथ विसर्जन जरूरी है। विसर्जन नहीं करने वाला तकलीफ पाता है। खाने वाला खाता ही खाता रहे, विसर्जन नहीं करें तो क्या होगा? आपने पाया है तो दें। अर्जन करने वाला देता है तो ठीक, अन्यथा कर्मों का भार बढ़ाता है। कंजूस-मक्खीचूस क्या देगा?

कंजूस अशोभा पाता हैं और भीतर में रही पूँजी खुटाता है। अर्जन है तो कुछ-न-कुछ विसर्जन होना चाहिए। यदि सौ दिल की दिवाली मनाए रुपये कमाओ तो उसका एक-दो-पाँच प्रतिशत जो भी आपकी भावना है, निकालो। पाया है तो दान करो। दोगे तो मिलेगा। नहीं तो फिर कंजूस की तरह पानी पीकर पेशाब तोलने वाले यश-कीर्ति के न भागी हुए हैं, न होंगे।

शुद्धिकरण के पूर्व संयम करना चाहिए। आपके पास गाड़ी है। गाड़ी में पेट्रोल की टंकी भरी हुई है, गाड़ी में ए.सी. है, ड्राइवर अच्छा है, गाड़ी के पहियों में हवा भी पूरी है, सब कुछ ठीक है परन्तु गाड़ी में ब्रेक नहीं तो उस गाड़ी में क्या आप बैठेंगे? जिस गाड़ी का ब्रेक नहीं, उसमें कोई भी बैठना नहीं चाहता। संयम ब्रेक का काम करता है। संयम घर का दरवाजा है। आपका घर चाहे जितना अच्छा है, घर में ए.सी. है, फर्नीचर है, गद्दा-पलंग है, सुख-सुविधा की सारी सामग्री है किन्तु घर के किवाड़ नहीं तो क्या उस बंगले में कोई रहना चाहेगा? बिना किराये भी उस घर में कोई रहना नहीं चाहता। क्यों? क्योंकि आप उस घर में रहना चाहते हैं, जहाँ तन की रक्षा हो, माल की सुरक्षा हो। रक्षा-सुरक्षा नहीं तो घर या बंगले का क्या महत्व? बस, यही बात संयम के लिए है। संयम नहीं तो जीवन नहीं।

पर्वाधिराज पर्युषण पर्व के सातवें दिन शुद्धिकरण की बात कही गई। आज इस आठवें दिन हिसाब-किताब करें। इतने दिन सुन लिया, न जाने कितने-कितने दृष्टान्त सुने हैं, आज विचार करें कि हमारी आय क्या है? व्यय क्या है? हमारी संवर-साधना बढ़ रही है या आश्रव? आज संवत्सरी महापर्व के दिन हमें अपना हिसाब-किताब जाँचना है, देखना है। पुण्य-पाप का लेखा-जोखा करना है। आपने न जाने कितनी-कितनी बातें सुनी, कितने-कितने दृष्टान्त ध्यान में लिये, भगवान की वाणी श्रवण करने का सुअवसर पाया, चिन्तन यही करना है कि जीवन में कितना उतरा है?

जीवन-व्यवहार में धारण नहीं करेंगे तो कल्याण होने वाला नहीं है। भगवान महावीर को छ-छः महिने संगम ने कष्ट दिए, फिर भी भगवान की करुणा देखिए। शास्त्रकार इसीलिए कहते हैं - “खन्ती सूरा अरिहन्ता !” उपसर्ग, परीषह, दुःख, साधु सहन करता है। क्षमा के इस अवसर पर जो-जो बातें कही गई हैं, उन पर आप चिन्तन करना। मान लीजिए आपके बहुत विरोधी हैं बहुत विरोधियों में जितने विरोधी घटेंगे, उतनी संख्या कम होती जाएगी। विरोधी कम होंगे इसका मतलब है जितनी शत्रुता घटती है, उतनी मित्रता बढ़ती है। क्षमावन्त शत्रुता मिटाता है, मित्रता बढ़ाता है। आपको ये बातें अच्छे मन से, शुद्ध भावना से कचरा हटाने के लिए और गुण-ग्रहण करने के लिए कही गई हैं। मेरे द्वारा या संतों के द्वारा उपदेश रूप, आदेश रूप कुछ कहने में आया हो अथवा महासती मण्डल की ओर से कुछ कहने में आया तो उसके लिए क्षमायाचना। दुर्भावना से कहने-सुनाने का लक्ष्य न था, न है फिर भी किसी को कोई चोट पहुँची हो, बुरा लगा तो तो क्षमायाचना के पर्व पर मैं अपनी ओर से, संत-सतियों की ओर से क्षमायाचना करता हूँ। गोचरी में, व्याख्यान में, पढ़ने-पढ़ाने की दृष्टि से या प्रश्नोत्तर व चर्चा में किसी का मन दुःखा हो तो मन-वचन-काया से क्षमायाचना कर रहा हूँ। मैं यहाँ यह भी सूचना करना कर्तव्य समझता हूँ कि आप अगले संवत्सर तक के लिए अपनी योजना बनाइये, कार्यक्रम निर्धारित कीजिए। चातुर्मास का अभी आधे से ज्यादा समय अवशेष है इसमें ज्ञान-ध्यान, त्याग तप, साधना-आराधना, व्रत-नियम करने में, श्रद्धा में स्थिरता लाने में, सबको साथ लेकर शासन-दीप्ति में आगे बढ़ने का प्रयास करेंगे तो शासन देव की कृपा कहिए या गुरु भगवन्त (गुरु हस्ती) का परोक्ष आशीर्वाद कहिए या संघ की पुण्यवानी कहिए, आप ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप में उत्तरोत्तर विकास करेंगे, आगे बढ़ेंगे, यही मंगल मनीषा है। ●

क्रोध कषाय : स्वरूप, दुष्परिणाम, कारण एवं निवारण

प्रवचनकार : श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म. सा.

क्रोध के सम्बन्ध में लोग कुछ प्रश्न पूछते हैं, उनका सामान्य रूप से समाधान देखते हैं।

प्रश्न १ : बच्चों पर, नौकरों पर गुस्सा करना पड़ता है। क्या करें ?

उत्तर: माता-पिता क्रोध करके अपनी सन्तान को समझाना - सुधारना चाहते हैं, पर उनका यह सोचना उचित नहीं है। बच्चों को प्रारम्भ से ही इस तरह ढालना चाहिए कि वे आँख के इशारे से ही समझ जाएँ अथवा प्रेम से मधुर भाषा में उन्हें समझावें। उन्हें आप जिस गलत कार्य से रोकना चाहते हैं, उससे होने वाले अहित बतावें। आज भी ऐसे माता-पिता हैं जो कहते हैं हमारे बच्चों को गुस्सा आता ही नहीं है। क्योंकि हम कभी उनके सामने क्रोध से पेश ही नहीं आये। सदैव इन्हें आत्मीयता से ही समझाते हैं। क्रोध की अपेक्षा प्रेम अधिक असरकारक होता है, साथ ही दीर्घ स्थायी भी होता है। ऐसे सुन्दर व्यवहार से बच्चे भी सदैव प्रसन्न रहते हैं। महात्मा गाँधी भी बच्चों को प्रेम से समझाने के ही पक्षधर थे। साथ ही माता-पिता का कर्तव्य बनता है कि दम्पती भी सन्तानों के सामने झगड़ा न करें। क्रोध का वातावरण न मिलने से उनमें सहज ही शान्तता, सौम्यता, प्रसन्नता बनी रहेगी। संतान को भी आपस में प्रेम से रहने के ही संस्कार प्रदान करें। अधिकारी का, मालिक का अपने अधीनस्थ कर्मचारी पर सौहार्दपूर्ण, अपने आत्मीय परिजन के समान ही व्यवहार होना चाहिए। आगमकाल में अपने यहाँ कार्यरत कर्मचारी को कौटुम्बिक पुरुष के रूप में माना जाता था, पुकारा जाता था। लोग तर्क करते हैं उन पर गुस्सा नहीं करेंगे, रौब नहीं जमायेंगे तो वे सिर पर चढ़ जायेंगे, कार्य बराबर नहीं करेंगे, पर वास्तव में ऐसा नहीं है। आप

उनके साथ प्रेम से व्यवहार करेंगे, उनकी जरूरतों का ध्यान रखेंगे तो वे दौड़कर कार्य करेंगे, अच्छा कार्य करेंगे। प्रेम प्राणिमात्र को प्रिय है। प्रेम की शक्ति अद्भुत है, आप एक बार विश्वासपूर्वक आजमाकर देखिये। कठोर शब्दों का उपयोग करना पड़े तो ऐसा करते समय भावना द्वेष पूर्ण न हो, सुधार के लिए संतुलित रूप में कहने का अभ्यास करें।

प्रश्न २ : कहाँ तक सहन करें, सहन करने की भी कोई सीमा होती है ? गुस्सा आ जाता है।

उत्तर : भगवान फरमाते हैं जहाँ तक मोक्ष नहीं हो जावे, वहाँ तक समता से सहन करना है। किसी जिज्ञासु ने गुरु से प्रश्न किया- कहाँ तक सहन करें। गुरु ने कहा- जब तक चलनी द्वारा कुएँ से पानी नहीं निकल जाए तब तक सहन करो। जिज्ञासु ने पूछा यह कैसे सम्भव है ? गुरु ने कहा- धैर्य रखो, शरद ऋतु में चलनी में रहा हुआ वह पानी बर्फ बन जाएगा, तब अपने आप निकल जायेगा।

प्रश्न ३ : अपकारी को उपकारी कैसे मान लें ?

उत्तर : बाहर में अपकारी कोई होता ही नहीं है। अपकारी तो स्वोपार्जित अशुभ कर्म हैं। विपरीत व्यवहार करनेवाला तो अपकारी नहीं, उपकारी है। वह हमें कर्म कर्ज से मुक्त करने में मदद कर रहा है। उसे शत्रु नहीं, मित्र मानने पर समाधि टिक सकती है। संत तुकाराम की पत्नी उनके प्रति विपरीत व्यवहार करती थी तो भी वे उसे उपकारी ही मानते थे। सिर पर गन्ने के प्रहार से उसके दो टुकड़े हो गए। मुस्कराते हुए कहने लगे, अच्छा है - अलग से तोड़ने की मेहनत नहीं

करनी पड़ेगी। लो एक आपका और एक मेरा। महात्मा सुकरात की पत्नी भी उनसे विपरीत ही चलती थी, तो भी सदैव प्रसन्न रहते थे। एक बार तो उसने भला-बुरा सुनाकर कचरे की बाल्टी सिर पर उड़ेल दी। वे हँसते हुए कहने लगे – बादल पहले गरजते हैं, पीछे बरसते हैं। वातावरण सहज शांत हो गया।

प्रश्न ४ : सहनशीलता कैसे बढ़ायें ?

उत्तर : अभ्यास से, सकारात्मक सोच से सब संभव है। भयंकर क्रोधी स्वभाव वाले भी अभ्यास से सम्यक् विचारधारा से सहनशील बन जाते हैं। मानव तो क्या तिर्यंच विषधर चंडकौशिक भी क्षमाधर बन गया। सहनशीलता से होनेवाले तात्कालिक समाधि रूप फल को तथा परम्परा से होनेवाले सिद्धि तप फल को सामने रखें। इससे सहनशील बनने में बल मिलता है। प्रतिकूल करनेवाले को उपकारी मानने से भी सहनशीलता बढ़ती है।

एक सेठ के घर रामू नाम का नौकर था। वह बड़े ही तेज स्वभाव का था। उसके व्यवहार को देखकर तो उसे नौकर क्या, कोई सेठ ही कह सकता है। एक बार उस सेठ के घर मेहमान आया। सेठ ने कहा-“रामू! जरा दो गिलास पानी लाना।” नौकर बोला-“दो का क्या करोगे? आपने तो अभी पानी पीया है।” सेठ बोला-“गर्मी है, प्यास लग जाती है।” ठीक है, यह कहकर वह दो गिलास पानी लाया। थोड़ी देर बाद सेठ ने कहा-“रामू! जरा दो कप चाय लाना।” रामू कहता है-“दो क्या करोगे, आपने तो अभी चाय पी है।” सेठ कहता है, “अरे भाई, मेहमान का साथ देना पड़ता है।” अच्छा ठीक है, यह कहकर दो कप चाय लाया। थोड़ी देर बाद सेठ ने कहा-“रामू! इस बैठक की चद्दर में सल पड़ गये, इसे ठीक कर दे।” रामू कहता है-“आपमें बैठने का तरीका भी नहीं है, बार-बार चद्दर अव्यवस्थित कर देते हो”, यह कहकर उसने चादर को

ठीक किया। सेठ फिर से कहते हैं-“देख रामू! कमरे में कचरा बहुत हो गया है जरा सफाई कर दे।” रामू कहता है-“क्या सारे दिन यही कार्य करे, अभी थोड़ी देर पहले तो सफाई की, बार-बार कचरा फैला देते हो, यह कहकर सफाई की।

आगन्तुक मेहमान कहने लगे, यह नौकर है या आपका मालिक? सेठ बोले - यह मेरा मुद्गर है, मैंने इसे मेरी पसन्द से पैसे देकर रखा है। यह बहुत उपयोगी है। यह मेरी सहनशीलता की शक्ति को बढ़ाता है। जैसे मुद्गर से व्यायाम करके व्यक्ति शरीर की शक्ति को अभिवर्द्धित करता है, वैसे ही इसके व्यवहार से मैं सहनशीलता को बढ़ाता हूँ। अपकारी में भी ऐसी उपकारी की बुद्धि होने पर अवश्य सहनशीलता बढ़ती है।

प्रश्न ५ : कोई झूठ बोलता है तो मुझे सहन नहीं होता, गुस्सा आ जाता है, क्या करे?

उत्तर : झूठ बोलना किसी के स्वभाव में हो सकता है, पर मेरे स्वभाव में तो क्षमाभाव ही होना चाहिए। झूठ बोलने की गलती वह करे और हम क्रोध करके दुःखी होने की गलती, यह तो समझदारी नहीं, नासमझी है। दुनिया में बोलने वालों की कमी नहीं है। क्या उनके झूठे व्यवहार से आप हमेशा क्रोध ही करते रहेंगे? ऐसे तो आप कभी शान्त रह ही नहीं पायेंगे। हमें दूसरों के व्यवहार के आधार पर नहीं अपनी सम्यक् समझ के आधार पर अपने जीवन का निर्माण करना है। संगमदेव ने भगवान महावीर को चोर साबित करने की कोशिश की, पर भगवान ने उस पर क्रोध नहीं किया। क्षमाभाव ही रखा, यह है सही समझ।

प्रश्न ६ : कोई कहा नहीं माने तो गुस्सा आ जाता है, क्या करें?

उत्तर : अपने आपसे पूछना चाहिए, क्या मैं तो

सबका कहा मानता ही हूँ। जब हम स्वयं ही दूसरों का पूरा कहा नहीं मानते हैं तो अन्य से ऐसी अपेक्षा रखना भी उचित नहीं है। कहना नहीं मानने में, कहना नहीं मानने वाले का दोष नहीं है, अपितु स्वयं की अपात्रता का दोष है। कभी-कभी अहंकार में आकर व्यक्ति अनर्थ कर बैठता है, जिसका हर्जाना स्वयं को भी भुगतना पड़ता है। भगवान महावीर के जीव ने त्रिपृष्ठ वासुदेव के भव में शय्यापालक के कानों में गर्म-गर्म शीशा उडेलकर उसे यातना दी, जिसका परिणाम भगवान महावीर के भव में कानों में कीले ठुकवाकर देना पड़ा। अतः ऐसे अहंकारी भावों के फरेब में न आवें। सावधान हो जाएँ, क्रोध न करें।

प्रश्न ७ : कई लोग कहते हैं क्रोध थोड़ी देर ही आता है, पर उसमें भी पारा चढ़ जाता है, क्या करें ?

उत्तर : आग की चिंगारी भले ही छोटी ही हो पर वह भी विश्वसनीय नहीं है। जरा-सी चिंगारी भी दावानल का रूप धारण कर लेती है। कहा है - “अणथोवं वणथोवं, अग्नीथोवं कसायथोवं च । न हु मे विससियव्यं, श्रोवं पि हुं बहु होई। अर्थात् ऋण, व्रण (घाव) अग्नि और कषाय (क्रोध), ये थोड़े होते हुए भी इनको अधिक होने में देर नहीं लगती। उन शान्त स्वभावी मुनिराज को चण्डकौशिक के भव में क्रोध थोड़ी देर का ही आया था। परन्तु वह थोड़ी ही देर का क्रोध भी उन्हें दुर्गतिदायक साबित हुआ। ऐसा विचार कर अपने आप को शान्त बनाएँ।

प्रश्न ८ : हमारी गलती नहीं, फिर हम क्यों सुनें ?

उत्तर : हमारी गलती नहीं होने पर भी अगर हमें कोई कटुक सुनाता है तो इसमें हमारा अशुभ कर्म का उदय है। सुनाने वाला तो मात्र निमित्त है। उस सुनाने वाले पर क्रोध करके तो और अशुभ कर्म का बंधन करना है, जो आगे और क्रोधोदय का कारण बनेगा।

वर्तमान में उसे समता से सहने में ही कर्म-निर्जरा है, समझदारी है। कर्म परम्परा को समाप्त करने का उपाय है। सती अंजना (पवनसुत हनुमान की माता) को उसकी सास ने खूब सुनाया, दुर्व्यवहार किया, अंजना के सौ भाइयों ने भी उसे घर पर ठहरने से स्थान देने से इंकार कर दिया, भला-बुरा कहा। पर उसने उनको दोषी नहीं मानकर स्वयं के कर्मों को दोष दिया। जिससे उसकी समाधि स्थिर रही, कर्म निर्जरा हुई। सीताजी के साथ भी विपरीत व्यवहार होने पर उन्होंने श्री राम को दोष न देकर अपने कर्मों को ही दोष दिया। मूला सेठानी ने चंदनबाला के साथ दुर्व्यवहार करने में, जली-कटी सुनाने में कसर नहीं रखी, पर उसने सब अपने ही कर्मों का दोष मानकर समाधिभाव को सुरक्षित रखा।

प्रश्न ९ : किसी के द्वारा कुछ नुकसान होने पर गुस्सा आ जाता है, कैसे रोके ?

उत्तर : जो नुकसान दूसरे से हुआ है, वह मेरे से हो जाता तो ऐसा विचार करने पर दूसरे पर गुस्सा नहीं आयेगा। कोई भी व्यक्ति जानबूझ कर नुकसान नहीं करता। भूल होना स्वाभाविक है। मान लीजिए कार्य करते हुए किसी के हाथ से कप-प्लेट फूट गए। तब यही विचारना चाहिए कि यह मेरे हाथ से फूटते तो किस पर गुस्सा करता। अब कलह करके क्यों इस शान्त वातावरण को दूषित करूँ। कटुक कहकर क्यों सामने वाले का दिल दुखाऊँ, क्यों कर्म बन्धन करूँ। गई हुई वस्तु पुनः आने वाली नहीं है। क्षमाभाव रखने में ही समझदारी है। वस्तु से ज्यादा व्यक्ति को महत्त्व देना चाहिए। एक नयी बहू के हाथ से गर्म-गर्म घी की तपेली (भगोनी) छूट गई। काफी मात्रा में घी गिर गया। सास दौड़ी-दौड़ी आयी और बहुरानी से बोली “बेटी! कहीं जली तो नहीं है। घी की चिन्ता मत करना यह फिर आ जायेगा।” इतना सुनते ही बहू के हर्षाश्रु टपक गये। वह कहने लगी “ऐसा तो मेरी सगी माँ भी नहीं करती।

वह भी एक बार तो डाँट देती, पर आप तो उनसे बढ़कर प्रेमदाता मिली।”

प्रश्न १० : क्रोध में जवाब तो नहीं देते, पर मन से क्रोध को कैसे जीतें ?

उत्तर : क्रोध के क्षणों में आपस में सवाल-जवाब नहीं करना चाहिए, यह तो ठीक है। परन्तु क्रोध में अबोल होकर भी नहीं बैठना चाहिए। ऐसा व्यक्ति बाहर तो क्रोध जाहिर नहीं करता, पर अन्दर ही अन्दर कूढ़ता रहता है, जलता रहता है। यह क्रोध की खतरनाक स्थिति है। इसमें भयंकर शारीरिक, मानसिक व आत्मिक हानि है। कई बार व्यक्ति छोटा होता है, सामने वाला बड़ा होता है। ऐसी स्थिति में वह जवाब नहीं दे पाता, पर मन ही मन दुःखी होता रहता है। उसे ज्ञानबल से मन को समझाना चाहिए। क्षमाभाव को पुष्ट करना चाहिए। प्रीति का प्रधानता देनी चाहिए। अपने आप पर दया करनी चाहिए। आपस में बातचीत करके हुई कटुक बात का निराकरण करना चाहिए। ताकि प्रद्वेष लम्बे समय तक न चले।

कुमार को राजा उदायन की ओर से राज्य नहीं मिला, इस कारण उसने पिताजी पर द्वेष रखा जो उसके विराधक होने का कारण बना।

प्रश्न ११ : क्रोधी व्यक्ति को समझाने पर भी वह समझता नहीं है, क्या करें ?

उत्तर : दूसरे के समझाने से नहीं अपितु स्वयं को क्रोध की अनर्थता समझ में आने पर ही क्रोध छूटता है। एक बात का विशेष ध्यान रखें, क्रोध के क्षणों में व्यक्ति को नहीं समझावें। जब व्यक्ति शांत हो जाए तब उसे उसकी गलती का अहसास कराएँ ताकि वह आगे के लिए क्रोध से बच सके। कहते हैं-

**चढ़ते पानी पेशवो, तामस में अरदास ।
चढ़ते ताव औषध दे, तीनों बात विनाश ।**

अर्थात् नदी-नाले में जब बरसात का पानी भरपूर आ रहा हो, उस समय उसमें प्रवेश करना यह विनाश का ही कारण बनता है, क्योंकि जल की गहराई का पता नहीं होता। चढ़ते बुखार में कोई भी अनुभवी वैद्य (डॉक्टर) दवा नहीं देता। पहले वह जल आदि के प्रयोग से उसे कम करता है-फिर औषध देता है। देवे तो दवा बेकार हो जाती है। इसी तरह तामस (क्रोध) में समझाना भी निरर्थक है। उस समय समझाने पर व्यक्ति और अधिक उत्तेजित हो जाता है। कभी-कभी तो वह गुस्से में समझाने वाले को भी भला-बुरा सुना देता है, पिटाई तक कर देता है। इसीलिए अनुभवियों से उस समय उसे समझाने का निषेध किया गया है। उसके शान्त होने पर ही उसे समझावें। वह क्रोध नहीं करने का संकल्प करेगा तो अवश्य क्रोध को जीत पायेगा। ●

कडवे प्रवचन

लेखक : मुनी तुरुणसागर

★ रिश्ते चाहे कितने भी बुरे हों उन्हें भी निभाइए। तोडिए मत क्योंकि पानी भले ही गंदा हो, प्यास न बुझा सकता हो पर आग तो बुझा ही सकता है। मैं मानता हूँ : रिश्ते आजकल रोटी की तरह हो गए हैं। जरासी आँच लगी कि जल-भुन कर खाक। तुम्हें भी मानना पडेगा कि रिश्ते कभी भी कुदरती मौत नहीं मरते, उनका हमेशा ही इंसान कत्ल करता है, कभी नफरत से, तो कभी नजर अंदाजी से। ●

★ हर वक्त भाग्य को दोष देना भी ठीक नहीं है। कभी-कभी हम भी हद से ज्यादा माँग लेते हैं। आज का कर्म ही तो कल का भाग्य है। इसलिए अच्छे भाग्य के लिए अच्छे कर्म करो। कौन कहता है कि मनुष्य की हथेली की रेखाओं में उसका भाग्य लिखा होता है क्योंकि भाग्य तो उनका भी होता है, जिनके हाथ ही नहीं होते। अपना भाग्य मनुष्य खुद अपने हाथों से लिखता है। ●

कच्छर तपशील - सप्टेंबर २०२३

- ❖ श्री. रमणलालजी कपूरचंदजी लुंकड भोजनशाळा - क्षेत्रपाल प्रतिष्ठान
पुणे येथील दानवीर व प्रसिध्द बिल्डर श्री. रमणलालजी कपूरचंदजी लुंकड यांचा ७७ वाढदिवस २१ ऑगस्ट २०२३ रोजी क्षेत्रपाल प्रतिष्ठान, लोणीकंद येथे साजरा करण्यात आला. यावेळी श्री. रमणलालजी यांनी भोजन शाळेसाठी ५१ लाख रुपयाची दान राशी घोषित केली व भोजन शाळेची सर्व जबाबदारी लुंकड परिवार पहाणार आहे.
यावेळी साध्वी श्री विजयस्मिताजी, श्री श्रींप्रितीजी, श्री विधीजी म.सा. यांच्या सान्निध्यात क्षेत्रपालचे ट्रस्टी श्री. सतिशजी सुराणा, श्री. रविंद्रजी नहार, श्री. विजयजी समदडिया, श्री. लालचंदजी कर्नावट, श्री. संजयजी चोरडिया, श्री. विलासजी राठोड यांनी श्री. रमणलालजी, सौ. आशाबाई, श्री. रविंद्र, श्री. आकाश लुंकड व लुंकड परिवाराचे स्वागत व सन्मान केले. (बातमी पान १६३)
- ❖ जैन श्वे. मू. महासंघ - पुरस्कार वितरण
धार्मिक, सामाजिक, शैक्षणिक आणि उद्योग क्षेत्रात उल्लेखनीय कार्य करणाऱ्या व्यक्तींचा श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक युवक महासंघातर्फे पुरस्कार देऊन गौरविण्यात आले. उद्योजक श्री. संजयजी दानचंदजी घोडावत, उद्योजक आणि समाजसेवक प्रकाशजी कुंदनमलजी धोका, अखिल भारतीय श्री. जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक युवक महासंघाचे राष्ट्रीय अध्यक्ष हरेशभाई के. शाह, श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक युवक महासंघाचे संस्थापक-अध्यक्ष अचलजी व्ही. जैन आदी मान्यवर उपस्थित होते.
(बातमी पान १४९)
- ❖ आनंदऋषिजी हॉस्पिटल - आरोग्य शिबीर
नगर : राष्ट्रसंत प.पू. आनंदऋषिजी महाराज

यांच्या १२३ व्या जन्मदिना निमित्त श्री आनंदऋषिजी हॉस्पिटल मध्ये जैन सोशल फेडरेशन द्वारा आयोजित भव्य मोफत आरोग्य तपासणी शिबिराचा शुभारंभ पारस ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीजचे संचालक पेमराजजी बोथरा यांच्या हस्ते दीप प्रज्वलनाने करण्यात आला.

मेंदू विकार तपासणी व शस्त्रक्रिया शिबिर स्व. माणकचंद बोथरा यांच्या स्मरणार्थ पारस ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीजच्या वतीने आयोजित करण्यात आले होते. याप्रसंगी संतोषजी बोथरा, सतीशजी बोथरा, मनीषाजी बोथरा, संगीतजी बोथरा, प्रतिभाजी बोथरा, मंगलाजी रुणवाल, प्रेक्षाजी ओस्तवाल, प्रणेश, गौरव, रोहन, प्रसन्न, नेतल बोथरा, तेजल पगारिया, अभयजी गुगळे, डॉ. प्रकाशजी कांकरिया, डॉ. वसंत कटारिया आदि मान्यवर उपस्थित होते.

- ❖ डायग्नोपिन व देसाई आय क्लिनिक - कॅम्प
पुणे शहरातील डायग्नोपिन डायग्नोस्टिक सेंटर व एच.व्ही. देसाई आय हॉस्पिटल यांनी संयुक्तरित्या सुप्रिया हॉटेलच्या शेजारी, नेहरु मेमोरिअल हॉलच्या समोर, कॅम्प, पुणे येथे डोळ्यांचे चेकअप करण्याचा दवाखाना सुरु केला आहे. याचे उद्घाटन देसाई हॉस्पिटलचे अध्यक्ष श्री. राजेशजी शहा, चेअरमन नितीनजी देसाई, डायरेक्टर परवेज बिलिमोर्या, डायग्नोपिनचे संचालक श्री. प्रफुल्लजी कोठारी, श्री. मितेशजी कोठारी, श्री. शामजी कर्नावट इत्यादींच्या हस्ते संपन्न झाले. (बातमी पान १६९)
- ❖ डॉ. नलिनी जोशी, कविता संग्रह - प्रकाशन
पुणे येथील सन्मति तीर्थचे मानद निर्देशक व प्राकृत इंग्लीश डिक्शनरीचे मुख्य संपादक डॉ. नलिनी जोशी यांच्या कविता संग्रहाचे प्रकाशन त्यांच्या ७१ व्या वाढदिवसा दिवशी सज्जनबाई बोथरा, प्रतिभा मोडक इत्यादी मान्यवरांच्या हस्ते संपन्न झाले. (बातमी पान १२३)

- ❖ **सौ. सुषमा चोरडिया – जीवन गौरव पुरस्कार**
पुणे : शिक्षण, महिला सक्षमीकरण आणि समाजसेवा क्षेत्रातील उल्लेखनीय कार्याबद्दल सूर्यदत्त एज्युकेशन फाउंडेशनच्या उपाध्यक्षा सौ. सुषमाजी चोरडिया यांना सर्टिफिकेट ऑफ एक्सलेन्स-२०२३ जीवनगौरव पुरस्कार प्रदान करण्यात आला. राज्याचे कौशल्य विकास आणि उद्योजकता मंत्री श्री. मंगलप्रभातजी लोढा आणि महाराष्ट्र आरोग्य विज्ञान विद्यापीठाच्या कुलगुरु लेफ्टनंट जनरल (निवृत्त) डॉ. माधुरीजी कानिटकर यांच्या हस्ते चोरडिया यांना गौरविण्यात आले. (बातमी पान १६४)
- ❖ **श्री. विजयजी नवलखा – पुरस्कार**
पुणे येथील आदिनाथ स्थानक भवनचे माजी अध्यक्ष व धार्मिक सामाजिक कार्यात अग्रेसर श्री. विजयजी नवलखा यांना आनंद दरबार कात्रज येथे उपप्रवर्तिनी श्री चंदनबालाजी म. सा. आदि ठाणा यांच्या पावन सान्निध्यात संत सेवा रत्न पुरस्कार

देऊन सन्मानित करण्यात आले. पुरस्कार देताना श्री. अनिलजी शिंगवी, अर्हम् फाऊंडेशनचे श्री. शैलेशजी पगारिया, गौतमनिधीचे राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री. अनिलजी नहार व संघाचे अध्यक्ष श्री. बाळासाहेब धोका. (बातमी पान १५७)

- ❖ **कु. ओवी फिरोदिया – पुणे**
पुणे येथील कु. ओवी सुमितजी फिरोदिया हीने गिनेस बुक ऑफ वर्ल्ड रेकॉर्ड मध्ये नाव नोंदवले आहे. बेळगाव येथील शिवगंगा रोलर स्केटिंग क्लब द्वारा “सलग ४८ तासात फास्टेटस १०० मीटर स्केटिंग” चे आयोजन करण्यात आले होते. या उपक्रमाला गिनेस बुक ऑफ वर्ल्ड रेकॉर्डची मान्यता नुकतीच मिळाली आहे. सर्टिफिकेट सोबत कु. ओवी, आजी श्रीमती जयश्री सतिशजी फिरोदिया, वडील सुमित, आई सौ. स्नेहल, भाऊ ओजस इ. (बातमी पान १५७)



❁ जैन जागृति - दीपावली अंक ❁

भारतात व परदेशात बहुसंख्य जैन परिवारात दीपावली पूजन विधी
जैन जागृति मासिका वरुन केली जात आहे.

जैन जागृतित जाहिरात देऊन जैन समाजाशी संवाद साधा.
ऑक्टोबर-नोव्हेंबर २०२३ (संयुक्त अंक)

३१ ऑक्टोबरला प्रसिध्द होणाऱ्या दीपावली अंकासाठी १५ ऑक्टोबर २०२३ पर्यंत जाहिरात पाठवा.



आर्ट पेपर वर रंगीत (Colour) जाहिरात		व्हाईट पेपरवर एका रंगात (Black & White) जाहिरात	
पूर्ण पान	रु. ९०००/-*	पूर्ण पान	रु. ४२००/-
१/२ पान	रु. ४७००/-*	१/२ पान	रु. २५००/-
*डिझाईन व पॉझेटिव्ह खर्च वेगळा (रु. ५००)		१/४ पान	रु. १४००/-
GST - 5% Extra.		१/८ पान	रु. ९००/-

आजच्या स्पर्धेच्या युगात जाहिरात ही अत्यावश्यक बाब झाली आहे. जैन समाजात “जैन जागृति” हे सर्वात प्रभावी माध्यम आहे. आपल्या व्यवसायाची जाहिरात “जैन जागृति” मध्ये द्या. – संपादक

E-mail - jainjagruti1969@gmail.com www.jainjagruti.in